Date :- 25/5/2020	Degree Part-II (Hons.)
Content Writer :-	Paper - II
Dr. Abhay Kumar Pathak	Content of Paper :-
Dept. of Economics,	Indian Economy
Marwari College,	Module :- 1
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- TRADITIONAL FEATURES OF INDIAN ECONOMY
(भारतीय अर्थव्यवस्था की परंपरागत विशेषताएँ)

Scanned with CamScanner

भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषता के अंतर्गत प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक क्षेत्रों का अध्ययन किया जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषताओं के अध्ययन के प्रक्रिया के दृष्टिकोण से इसके परंपरागत विशेषताओं एवं नवीन विशेषताओं का अध्ययन किया जाता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की परंपरागत विशेषताओं का निम्नांकित शीर्षकों के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है।—

(i) कृषि की प्रधानता :—

भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि यहाँ कृषि व्यवसाय की प्रधानता है। यहाँ कुल कार्यशील जनसंख्या का 48.9% कृषि व्यवसाय में तथा शेष 51.1% उद्योग एवं अन्य सेवा क्षेत्रों में लगा हुआ है। परन्तु कृषि व्यवसाय मात्र 19.83% ही राष्ट्रीय आय में अपना योगदान दे पाता है। यहाँ के विदेश व्यापार में भी कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। लगभग 14.2% निर्यात प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्यों से होता है।

(ii) ग्रामीण अर्थव्यवस्था :—

भारतीय अर्थव्यवस्था ग्रामीण है। जनगणना रिपोर्ट 2011 के अनुसार देश की 83.3 करोड़ जनसंख्या गाँवों में निवास करती है, जो कुल जनसंख्या का 68.84% है। यह प्रतिशत अन्य देशों की तुलना में बहुत ज्यादा है।

(iii) प्रति व्यक्ति निम्न आय :—

भारतीय अर्थव्यवस्था

Scanned with CamScanner

की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि यहाँ प्रति व्यक्ति आय निम्न स्तर पर है। विश्व बैंक रिपोर्ट 2017 के अनुसार वर्ष 2016 में भारत में प्रतिव्यक्ति आय 1750.6 डॉलर थी, जबकि अमेरिका में यह आय 55,980 डॉलर थी। रंगराजन विशेषज्ञ ग्रुप ~~प्रणाली के अनुसार भारत की 29.5% जनसंख्या~~ गरीबी रेखा के नीचे है।

(IV) पूँजी की कमी :-
भारतीय अर्थव्यवस्था में पूँजी की कमी है। इसका मुख्य कारण बचत एवं निवेश के निम्न दरों का होना है। यहां राष्ट्रीय आय एवं प्रतिव्यक्ति आय कम होने के कारण बचत का स्तर निम्न है।

(V) जनसंख्या का अधिक दबाव :-
भारतीय अर्थव्यवस्था पर जनसंख्या के भार का अत्यधिक दबाव है। इसका तात्पर्य, यहाँ की जनसंख्या विकसित देशों की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ रही है। 2011 के जनगणना रिपोर्ट के अनुसार सम्पूर्ण विश्व की 17.5% जनसंख्या भारत में निवास करती है जबकि इसके पास विश्व के कुल स्थल क्षेत्र का मात्र 2.4% भाग ही है।

(VI) व्यापक बेरोजगारी :-
भारत में बेरोजगारी का स्तर बहुत ज्यादा है तथा इसमें लगातार वृद्धि हो रही है। आज बेरोजगारी के अंतर्गत

Maharaja

Scanned with CamScanner

अर्द्ध बेरोजगारी एवं छिपी हुयी बेरोजगारी भी पायी जाती है

(VII) सम्पन्नता में दरिद्रता :- भारत में खनिज-संपदा, वन-संपदा, जन-संपदा एवं अन्य साधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इन संसाधनों का समुचित विदोहन नहीं हो पाने के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था का समुचित विकास उस अनुपात में नहीं हो पाता है जिस अनुपात में विभिन्न संसाधन उपलब्ध है।

(VIII) तकनीकी ज्ञान का निम्न स्तर :- भारत में शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, अनुसंधान एवं विकास आदि की सुविधाओं का बड़ा अभाव है इसके कारण यहाँ का तकनीकी ज्ञान निम्न स्तर का है तथा इसी कारण कृषि एवं उद्योग दोनों ही क्षेत्रों का उत्पादकता का स्तर निम्न है।

(IX) आर्थिक विषमता :- भारतीय अर्थव्यवस्था में संपत्ति एवं आय के वितरण में काफी असमानता है। राष्ट्रीय आय के आंकड़ों के अनुसार वर्तमान मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय में सभी प्रदेशों में भी समानता नहीं है।

(X) परम्परावादी समाज :- भारतीय अर्थव्यवस्था

Scanned with CamScanner

की एक प्रमुख विशेषता है कि यहाँ का समाज रूढ़िवादी, भाग्यवादी एवं परंपरावादी है समाज की इस व्यवस्था के कारण लोग सुखी जीवन व्यतीत करने में अक्षम होते हैं, साथ ही उद्योग के क्षेत्र में भी परम्परागत तकनीक इस्तेमाल करने के कारण उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(XI) परिवहन एवं संचार साधनों का अभाव :- भारत में परिवहन एवं संचार साधनों का समुचित व्यवस्था नहीं रहने के कारण विकास का कार्य धीमी गति से चलता है। अभी तक भारत में इस आधारभूत संरचना का विकास भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए पर्याप्त नहीं है।

(XII) समुचित कौशल का अभाव :- भारत में मानव संसाधन तो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है लेकिन वे संसाधन समुचित कौशल के अभाव में विकास में संपूर्ण भागीदारी नहीं कर पाते हैं।

Scanned with CamScanner